:- अष्टम अध्याय -:

अमृतराय

	नायिका	उपन्यास	प्रकाशनवर्ष	संस्करण
१.	ऊषा	बीज	१९५३	१९८१
२.	रत्ना	हाथी के दाँत	१९५६	१९८२

अमृतराय की नायिकाओंमें ऊषा (बीज), रत्ना (हाथी के दाँत) ये दो नायिकाएँ महत्वपूर्ण हैं ।

१. ऊषा (बीज) --

ऊषा 'बीज' उपन्यास की नायिका है । ऊषा मालवीय ब्राह्मण है । वह देशभक्त ध्येयवादी युक्ती है । सत्यवान देशभक्त कम्युनिस्ट युवक है । ऊषा और सत्य एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं । सत्य ब्राह्मण नहीं है । सत्य - ऊषा का अंतर्जातीय विवाह होता है । ऊषा नौकरी करती है । क्रांतिकारी सत्य जेल जाता है । ऊषा का जीवन बदल जाता है । वह अछूत बस्ती में रात की पाठशाला चलाती है । अछूत मेहतरोंका नेतृत्व करती है। जुलूस में घायल होती है । सत्य रिहा होता है । सत्य ऊषा की भेंट होती है ।

ऊषा मालवीय एक खूबसूरत लड़की है । सत्य को ऊषा 'भोली नेक खूबसूरत' लगती है । अकाल पीडितों की सहायता के लिए सत्य वैरायटी शो आयोजित करता है । शो का ऊषापर प्रभाव पड़ता है । ऊषा में विचार करनेकी शक्ति है । साम्यवादी रूस का चित्र प्रस्तुत करनेवाली प्रदर्शनी ऊषा देखती है । वहाँ स्त्रियों को हर क्षेत्र में काम करना पड़ता था । ऊषा के लिए यह बहुत बड़ी बात थी । जोया जैसी बहादुर लड़कीके चरित्र से ऊषा प्रभावित होती है । जोया को फाँसी होती है। उसका भाई अलेक्झांडर बहन की हत्या का बदला लेने जाता है और नाजी हत्यारों से वीरगति पाता है । ऊषा सोचती है -- "नहीं तो यह अभागा देश है, जिस में स्त्रियों को समझा नहीं जाता, स्त्रीयाँ भी भला कुछ कर सकती हैं, अपना चौका-चूल्हा संभाल ले, अपने बाल बच्चों को देख ले यही बहुत है ।"[१]

---

१ अमृतराय - बीज - तीसरा संस्करण - पृ.११४

सत्य ऊषा का प्रेमविवाह हो जाता है । सत्य की माँ का विवाह के लिए विरोध था । सास बहु का संघर्ष शुरू होता है । सास जब ऊषा के घरवालों को दोष देती है तो ऊषा स्पष्ट कह देती है --" अम्माजी, आपको जो कुछ कहना हो मुझे कहा करें, मेरे घरवालों को फिजूल मत घसीटा करें । उन्होंने आप का क्या बिगाड़ा है । बिगाड़ा है तो मैं ने ।"[१]

सत्य और ऊषा माँ से अलग रहने लगे । प्रफुल्ल बैनर्जी के घर के पास मकान लिया । पडोस में बिशन साहनी - दमयंती का सधन परिवार था । ऊषा अरुण को जन्म देती है । उस के मन में आता है अपने घर में भी नौकर हो, जीवन आराम से बीते । दयमंती के घर के नौकर, खानसामा, सजाया हुआ ड्राइंग रूम सब ऊषा के घर के अभाव को और भी उभार देते हैं ।

सत्य गुप्त रूप में क्रांतिकार्य में व्यस्त रहता है, रात को देर से घर आता है । दोनों में संघर्ष शुरू होता है । ऊषा सत्य को बता देती है --- ' मैं भी इन्सान हूँ सत्य । ' घर में नौकर रखने का ऊषा आग्रह करती है और कहती है --" सौ बात की एक बात यह है कि मैं भी जिन्दगी में कुछ सुख सुविधा चाहती हूँ और मैं नहीं समझती कि दिल में ऐसी चाह का होना कोई जुर्म है । जिसे देखो वही इसी सुखसुविधाकी तलाश में भटक रहा है ।"[२]

ऊषा सुखी नहीं थी । सत्य उस की कद्र करने लगा । उस के लिए साडी खरीदना, किताब देना, अरुण को घुमाना आदि उपक्रम चलने लगे तो ऊषा खुश हुई और उसका व्यक्तित्व फूलने लगा ।

मुर्दे में भी जान भर देनेवाली फ्रूचिक की किताब ऊषा को बहुत अच्छी लगी । वह कहती है -- ' मैं सच कहती हूँ सत्य खुद तुम को समझाने में मुझे उस किताब से मदद मिली है ।'[३]

---

१ अमृतराय - बीज - तीसरा संस्करण - पृ. १६५

२ अमृतराय - बीज - पृ. २४१

३ - वही - पृ. ३३२

पति के कार्यों में ऊषा का विश्वास बढ़ने लगा । उसके उद्देश्योंपर भरोसा होने लगा । सत्य को घर आने में देर होने के बाद भी ऊषा मुसकराकर उसका स्वागत करती । उसे विश्वास था कि देर तो किसी काम के कारण ही हुई होगी ।

ऊषा ने नौकरी करने का निश्चय किया । ऊषा अब सत्य की पत्नी ही नहीं साथी, हमसफर, हमदम थी ।

साम्यवादी विचारों के कारण सत्य को नौकरी से हटा दिया जाता है, इस बात का ऊषा को संतोष होता है । ऊषा में होनेवाले परिवर्तन सत्य देखता है और सोचता है --"ऊषा का तो मानसिक कायाकल्प हो गया है । सच बात है ऊषा जैसा जीवनसंगी मुश्किल से मिलता है । उस में कभी कोई खोट नहीं थी । घर का मोह किसे नहीं होता ? वही तो ऊषा को भी है । तो उसमें बुराई क्या है ? हाँ अब इतना और हुआ कि संघर्ष की इस जिन्दगी में घर के मोह की क्या मुनासिब जगह है, यह भी उसकी समझ में आ चला है और यह बहुत बड़ी बात है"।[१]

गर्ल्स स्कूल में ऊषा नौकरी करती है । एक दिन सत्य गिरफ़्तार हुआ । ऊषा की आँखों से आँसू झरने लगे पर वह डरी नहीं । उसने सोचा -"जिन्दगी मुझे जीनी है इसी आँधी तूफान में, इन्हीं संघर्षों के बीच । मैं तो समझाती हूँ भगवान ने मुझ को ट्रेनिंग देने के लिए यह सब घटना चक्र रचा है ।..."[२]

नौकरी संभालकर ऊषा ने समाजकार्य आरंभ किया । बच्चों और औरतों को पढ़ाने के लिए उसने अछूतोंकी बस्ती में नाइट स्कूल शुरू किया । सच्चा आत्मिक संतोष उसे अछूत, चमार, पासी लड़कों को पढ़ाने में ही मिलता । एक बार स्कूल चाहे न भी जाय वह नाइट स्कूल जरूर जाती । अछूत बच्चोंका दिल दुखाना उसे नामंजूर था । सामाजिक कर्तव्य का अहसास ऊषा को तीव्रतासे होने

---

१ अमृतराय - बीज - पृ. ३८४

२ - वही - पृ. ३९५

लगा। वह सोचती - " सारे जमाने को गरीब और नंगा रखकर अब अपनी सफेदपोशी का बोझा ढोया नहीं जाता । उसी ऋण को सिर से उतार रही हूँ "[1]

अरुण को उषा अछूतों की बस्ती में साथ ले जाती है । वह कहती है बेटा राजकुमारों के संग खेलता है । उषा अछूत लड़कोंको राजकुमार कहती है क्यों कि उसका विश्वास है कि कल को उन्हीं का तो राज होगा ।

साहनी साहब की अमीरी देखकर पहले उषा के मन में जलन पैदा होती थी अब उसके विचारोंका रुख बदल गया है । शोषण का तत्व अब वह जानने लगी है । वह सोचती है --" साहनी साहब के आलीशान बंगले की नींव में न जाने कितने गरीबों की लाशें, होंगी, न जाने कितनों को रौंदकर यह इमारत खडी हुई होगी ।... अगर हम अपने समाज को भी एक इमारत मान ले तो साहनी साहब का बंगला उसका अगवाडा है और उसका पिछवाडा है साहनी साहब के पिछवाडे की वह अछूत बस्ती जिसके बीच से साहनी साहब का नाला वाकई बहता है "[2]

हरिजनों के लिए हरिजन नाम देने के सिवा समाज तथा देश के नेता महात्मा गांधी ने कुछ नहीं किया यह उषा समझाने लगी है। खुद के विचार - आचारो में होनेवाला परिवर्तन उषा महसूस करती है । उसका यह मत बन गया है --" मेरा पुनर्जन्म हो रहा है । मुझे कहनी नहीं चाहिए ऐसी बात, मगर यह सच है कि सत्य का जेल जाना परीक्षा रूप में मेरे लिए वरदान सिध्द हुआ ।.... सत्य,तुम अब जब आओगे अपनी उषा को और ज्यादा अपनी पाओगे ।"...[3]

---

१ अमृतराय - बीज पृ. ३९९

२ - वही - पृ. ४००

३ - वही - पृ. ४०३

निरपेक्ष सेवा करके उषा ने अछूत और दलितोंका विश्वास प्राप्त किया। मेहतरों की महंगाई के लिए लड़ाई शुरू हुई। इस लड़ाईका नेतृत्व उषा करें यह दलितों की इच्छा है। वे उषा को अपने साथ रहने की प्रार्थना करते हैं। एक बुढ़िया कहती है -- ' तुम साथ रहोगी बिटिया तो बड़ी तागद रहेगी, उन सब भी समझेंगे कि हाँ .?....'[१]

देश के कार्यों में आमजनता का सहयोग अपेक्षित है। देश की हिफाजत भी देश के स्त्री-पुरुष, बच्चे बूढ़े सब मिलकर करेंगे। उन में अलगाव की भावना नहीं पैदा होनी चाहिये। उदासीनता की भावना नहीं आनी चाहिये। पिताजी के सामने बड़े गंभीर विचार उषा प्रकट करती है। लोगों की बेकारी हटेगी तो उनका जीवन सुखी होगा और सभी देशकार्य में सहयोग देंगे, देश की रक्षा करेंगे। उषा कहती है --" देश की रक्षा पुलिस और मिलिटरी अकेली नहीं कर सकेगी। यह बुरी बात है कि लोग आजादी के मुकाबले में अंग्रेजी गुलामी को सराह रहे हैं। लोगोंकी बेकारी हटी है और वे मुस्करा रहे हैं,यह चित्र हो देश का तब देशकी रक्षा बच्चा बच्चा करेगा "।[२]

उषा ठीक तरहसे देखती है कि आजादी के लाभों से दलित शोषित जनता वंचित है। आजादी के फायदे इन लोगोंतक जब नहीं पहुँचे तो आजादी की कीमत ये क्या समझेंगे। उषा कहती है --' लोगों को एक बार समझाने का मौका तो दीजिए कि जिन्दगी में आजादी कहते काहे को हैं, वह चीज क्या है, देश आजाद होता है तो उस के रंग ढंग में आखिर कौनसी तबदीली आ जाती है, उन्हें उस चीज के दर्शन खुद अपनी जिन्दगी में हो, तब तो उन्हें महसूस हो कि कितनी अनमोल चीज दाँवपर लगी है जिसकी हिफ़ाज़त उन्हें करनी है।[3]

१	अमृतराय - बीज -	पृ. ४०६
२	- वही -	पृ. ४०९
३	- वही -	पृ. ४०९

अछूतों का जीवन उषा ने करीब से देखा है, उनकी जिज्ञासा देखी है । वह विषाद अनुभव करती है और कहती है -- "ये लोग कितना जानना चाहते हैं पर साधन नहीं हैं । जिनके पास साधन हैं उनके पास जिज्ञासा नहीं है और जिनके पास जिज्ञासा हैं उनके पास साधन नहीं हैं ।"[१]

अछूतों के नंगे बच्चे बच्चियोंको देखकर उषा का दिल दहल जाता है । वह भगवान को कोसने लगती है ।

मेहतरों की हड़ताल होती है । जुलूस का नेतृत्व उषा करती है । सभाओं में वह भाषाण देती है और मेहतरों की न्यायोचित मांग की भूमिका प्रतिपादन करती है । एक हजार मेहतरों के जुलूस की नेता वह बनती है । जुलूस पर लाठी चार्ज होता है । झांडा लेकर आगे रहनेवाला शंभू गिरा दिया जाता है । उषा शेरनी की तरह झांडा लेकर चिल्लाती है -- " इम्तहान की घडी यही है । अपनी जगह से हिलो भी मत । हक के लिए लड़ने निकले तो हिम्मत से --'...[२]

उषा पर लाठियाँ चलती है । वह घायल होकर गिरती है । मतई नाम का मेहतर तो ठंडा होता है । घायल उषा की तीमारदारी अछूत बस्तीमें, हार्दिक ममता से होती है । उषा होश में आती है । सत्य जेलसे मुक्त होकर आता है । उषा की चोट के बारे में पूछता है तो उषा उत्तर देती है -- ` तुम्हीने तो यह घाव दिया और तुम्ही पूछते हो ।`

उषा का व्यक्तित्व स्वतन्त्र है । सत्य के विचारोंसे प्रभावित होकर वह उससे प्रेम करती है और भिन्नजातीय होते हुए भी उससे विवाह करती है । सासेसेमतभेद होते हैं तो वह पति के साथ अलग रहती है । उस में आत्मसम्मान है । ` मैं भी इंसान हूँ सत्य` इन शब्दों में वह प्रकट हुआ है ।

उषा सादगी से रहती है, खद्दर की साडी पहनती है । अपनी खस्ताहाल गृहस्थी और साहनी का धनी परिवार इस की तुलना वह करती है तब

---

१ अमृतराय - बीज - पृ. ४१०

२ - वही - पृ. ४१६

कुछ असंतुष्ट होती है । उषा का यह व्यक्तिवादी दृष्टिकोण अधिक देर नहीं टिकता । सत्य के विचारों को समझानेके उसके यत्न जारी रहते हैं ।

आत्मनिर्भर होने के लिए उषा नौकरी करती है । इस संदर्भ में डॉ. सुमित्रा त्यागी ने उचित ही कहा है -- ' अध्यापिका बनकर उषा आत्मनिर्भरता की स्थिति को प्राप्त कर सुखी होती है । सत्य के जेल जानेपर वह अपने पिता के पास नहीं जाना चाहती, किसीकी आश्रिता नहीं बनना चाहती । उसका कारण था ' अपनी नवार्जित स्वाधीनता, आत्मनिर्भरता की चेतना, जिसको इस खयाल से ही तकलीफ होती थी कि सत्य के हटते ही फिर किसी न किसीका (चाहे वह पिता ही क्यों न हो) आश्रय लेने के लिए मजबूर है । मैं अपने पैरपर खड़ी हो सकती हूँ "[१] (बीज - अमृतराय पृ. ३९५)

उषा की दृष्टि अधिकाधिक समाजाभिमुख बनती जाती है । सत्य के साम्यवादी विचारों में उसका विश्वास बढ़ता जाता है । सत्य की गिरफ्तारी के बाद उषा साहस के साथ आगे बढ़ती है, समय की चुनौती स्वीकार करती है । अछूतों के लिए नाइट स्कूल खोलना उषा का निर्णय क्रान्तिकारी है । दलित और अछूतों का विश्वास उषा की बहुत बड़ी कमाई है ।

सामाजिक विषमता और उसके दुष्परिणाम उषा अब समझ सकती है । " अछूतोंको शिक्षा प्रदान करते हुए उषा उनकी यथार्थ स्थितिका परिचय प्राप्त करती है कि किस प्रकार ये लोग सब कुछ सहनेपर भी तन को कपडा और खाने को दो जून रोटी नहीं जुटा पाते । ऐसी अवस्था में उषा उनके जीवन में विस्फोट की कल्पना करती है, जिस का प्रकटीकरण हड़ताल व आन्दोलन के रूप में वर्ग संघर्ष की चेतना प्रदान करता है । वह सोचती है - ' जब और नहीं सहा जाता तभी विस्फोट होता है "[२]

---

१ डॉ. सुमित्रा त्यागी - हिन्दी उपन्यास : आधुनिक विचारधाराएँ -पृ. ५३

२ अमृतराय - बीज - पृ. ७०

ऊषा बुर्जुआ मनोवृत्ति का त्याग करती है । बेटे अरुण के हरिजन बच्चों के साथ खेलने देती है । उसकी दृष्टि से हरिजन बच्चे `राजकुमार` हैं । ऊषा आशावादी है । भविष्य में शोषितों का राज होगा यह उसका विश्वास है ।

ऊषा के साहस का, दृढ़ता का परिचय मेहतरों के जुलूस के नेतृत्व में मिलता है । हक की लड़ाई में वह पीछे नहीं हटती । पुलिस की लाठियाँ सहती है, बेहोश होती है पर हिम्मत नहीं हारती । झंडा हाथ में लेकर औरों की हिम्मत बढ़ानेवाली ऊषा बहादुर नायिका है ।

ऊषा का चरित्र विकसनशील है । क्रांतिकार्यों में हिस्सा लेकर जेल में जानेवाले पति पर उसे गर्व है । ऊषा का चरित्र उपन्यासकी कथा के साथ निश्चित दिशा की ओर विकसित होता जाता है । इस संदर्भ में यह मत द्रष्टव्य है --"बीज में ऊषा का चरित्र सबसे अधिक विकसित हुआ है । वह आदर्श माँ है और आदर्श पत्नी ।.... ऊषा के चरित्र में कहीं भी मर्यादा के विरुध्द प्रतिक्रिया नहीं । उसका जीवन सर्वत्र ही बड़ा सन्तुलित रहता है । .... बीज में नारी चरित्रों में यौन विकृति नहीं । प्राय: सभी नारी पात्रों का विकास स्वाभाविक भावभूमिपर हुआ है । प्रगतिशील साहित्यकार नारी स्वाधीनता के पक्षपाती हैं; वे विवाह की उपयोगिता को भी नहीं मानते किन्तु अमृतराय ने विवाह की महत्ता की रक्षा करते हुए ही नारीकी स्वाधीनता का स्वप्न देखा है, यही उनकी सबसे बडी विशेषाता है ।"[१]

ऊषा सक्रिय नायिका है । चिन्तन तथा कृति के स्तरपर ऊषा प्रगतिशील नारी है । जाति के बंधन उसने तोड़ दिये हैं । ऊषा में आत्मविश्वास है । वह एक बुध्दिवादी नायिका है ।

प्रेम ऊषा की प्रेरणा है। अन्त में सत्य के प्रश्न का जो प्रतिकात्मक उत्तर वह देती है उसमें ऊषा के चरित्र का मर्म स्पष्ट होता है । पुलिस की लाठी

---

१ डॉ. शैल रस्तोगी - हिन्दी उपन्यासों में नारी - पृ. २३८-३९

से घायल ऊषा सत्य से कहती है -- ` तुम्ही ने तो यह घाव दिया और तुम्ही पूछते हो ! `

ऊषा के चरित्र में स्वाभाविकता है । उसका चरित्र समग्र रूपमें चित्रित हुआ है । पीडितोंके प्रति उसे गहरी सहानुभूति है । प्रफुल्ल बैनर्जी के देशभक्त, त्यागी परिवार के वातावरण का भी ऊषा के चरित्र पर असर होता है । सत्य की युक्ती मित्र राज का खून होता है तो ऊषा को बड़ा दुख होता है । सत्य के साम्यवादी मित्र वीरेन्द्र की आर्थिक मदद करने के लिए ऊषा अनुमति देती है । मानवता के पथपर अग्रसर होनेवाली ऊषा एक तेजस्विनी नारी है ।

ऊषा समाजसापेक्ष नायिका है और प्रतिनिधि पात्र भी है ।

(२) रत्ना (हाथी के दाँत) --

ठाकुर पदुमनसिंह उपन्यास का प्रमुख पात्र है । रत्ना उपन्यासकी नायिका है । प्रमुख पात्र सेंगरामऊ शहर के है ।

ठाकुर पदुमनसिंह एक दुहरे व्यक्तित्व का चालबाज नेता है । अनेक युवतियों को उसने अपनी वासनाका शिकार बनाया है । एक क्लर्क बाबू चंद्रिका प्रसाद की सुंदर परन्तु अतृप्त पत्नी है चम्पाकली । चम्पा और ठाकुर को शरीर सुख लेते समय चंद्रिकाप्रसाद देखता है । ठाकुर चंद्रिकाप्रसाद का खून करता है । प्रेत कुए में फेंक दिया जाता है ।

एक क्रान्तिकारी नवयुवक रावल ठाकुर पदुमनसिंह के विरुध्द चुनाव में खड़ा रहता है । ठाकुर के पराभव के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते है और चुनाव के पहले तीन दिन रावल की हत्या होती है । रत्ना रावल की प्रिया थी । रत्नापर रावल के खून का असर होता है । उसका जीवन एकाकी बन जाता है ।

अन्याय के विरुध्द लड़ने के लिए रामसिंह नामका युवक आगे आता है । वह रावल का मानो प्रतिरूप था । रामसिंह सत्ताधारी जालिमों के विरुध्द जुलूस

निकालता है । पुलिस अधिकारी रामसिंहपर गोली चलाता है । रामसिंह के आगे अचानक रत्ना आती है । उसे ही गोली लगती है । रत्ना शहीद होती है ।

रत्ना क्रान्तिकारी रावल की प्रेमिका है । रावल की हिम्मतपर जान देनेवाली युवतियों में रत्ना ही श्रेष्ठ युक्ती है । औरत सबसे पहले मर्द में हिम्मत देखती है । रावल में रूप और साहस का संयोग हो गया था ।

रत्ना देखने सुनने में कोई सुंदरी न थी । उससे सुंदर लडकियाँ गाँव में कई थी पर रत्नामें कोई ऐसी बात थी जो किसी के पास न थी । वह शायद थी उस दुबली पतली लम्बीसी, सावली सलोनी लड़की की एक खास तरह की गंभीरता जिस से बरबस रावल का मन मोह लिया था । रावल और रत्ना में सच्ची मुहब्बत थी । रावल रत्ना का प्रेम केवल लैला मजनू का प्रेम नहीं था । जुल्म और अन्याय का प्रतिकार करनेवाले रावल के रूपपर रत्ना मुग्ध हो गई थी । रावल के जनमदिनपर रत्ना गुलगुले खिलाकर रावलका मुँह मीठा करती है और जनम दिनकी भेंट के रूप में देती है एक केसरिया रंग का पाजामा कुर्ता और टोपी । रावल रजपूत था । जान की बाजी लगाकर रणभूमि में लड़नेवाले राजपूत योध्दा केसरिया रंग के वस्त्र पहनते हैं । रत्ना की ओर से रावल को समरभूमिके लिए राजपूती बाना मिलता है । रत्ना की इच्छा है कि उसका प्रियतम अन्याय और जुल्म के खिलाफ लड़ता रहे । रावल अपने को इस केसरिया बाने के काबिल सिध्द करता है । वह ठाकुर के विरुध्द चुनाव जीतनेवाला ही था पर धूर्त ठाकुर रावल का खून करवाता है । इस घटना का रत्नापर गहरा असर होता है । वास्तव में रावल - रत्ना का विवाह नहीं हुआ था । रत्ना ने रावल को मन ही मन अपना पति माना था । रावल की हत्यापर रत्ना रो-रोकर मरने को हुई पर मर न सकी ।[१] वह न मरना घोरतर पीडा थी क्योंकि उसके बादसे आजतक कभी किसीने उसे मुस्कराते नहीं देखा कि जैसे विषादका भरा बादल अंचल होकर उसके चेहरे पर बैठ गया हो ।[१]

---

१ अमृतराय - हाथी के दाँत - पृ.१२२

रत्ना ३१ वर्ष की प्रौढा बन गई । समाज की दृष्टि में वह किसी प्रकार विधवा नहीं है, पर अपनी दृष्टि में है । राक्ल की हत्या का दुख रत्ना के हृदय में जमकर बैठा था । वह जुल्म का बदला लेना चाहती थी । इस स्थिति में रामसिंह सामने आता है । सत्ताधारी जालिमोंके विरुध्द लड़ने की हिम्मत उस में है । रामसिंह जिन जालिमोंके विरुध्द जुलूस निकालता है उन में है राक्ल का खूनी ठाकुर पदुम्नसिंह जो बदमाशी करके भी विधिसभा का सदस्य है ।रत्ना चाहती है कि अत्याचारियों का मुकाबला करनेवाले रामसिंह की शक्ति बढ़े और उसकी जीत हो ।

जब रत्ना षोडशी थी तब राक्ल से प्रेम करती थी । राक्ल की हत्यासे उसका प्रेमजीवन ध्वस्त हुआ । उसने इसी तरह पंद्रह बरस काटे और वह अकाल प्रौढा बन गयी । उसके सारे शौक खत्म हो गये । रत्ना का जीवन अब जीवन नहीं रहा था ।" शायद और समय बीतने पर उसका घाव पुरे, मगर शायद नहीं । यों ही एक दिन वह मर जायेगी और वह उसकी लाश की मौत होगी क्योंकि रत्ना तो तभी मर चुकी, यह तो एक विषाद की कहानी है जो जी रही है -..... मैं जानता हूँ जिस दिन रत्ना नहीं रहेगी गाँवका तिनका-तिनका रोयेगा..."[१]

रामसिंह के नेतृत्व में सेंगरामऊ में जुलूस निकला । जुलूस में तमाशबीन कम और बागी ज्यादा नजर आ रहे थे । इतने बड़े जुलूस की उम्मीद रामसिंह ने भी नहीं की थी । ठाकुर पदुम्नसिंह की खूनी हवेली के सामने नारे लगाये जा रहे थे । रामसिंह जुलूस के आगे था । औरतों की टोली का नेतृत्व रत्ना कर रही थी । औरतों की टोली नौजवानों की टोली के आगे रहेगी इस लिए रत्नाने सम्मर्थन किया --" अबतक औरतें किसी गिनती में नहीं थी । लोग उन्हें घर का आभूषण बनाये हुए थे । लेकिन अब वह जा रही है, इसलिए उन्हें आगे आनेका मौका देना चाहिए । इतना ही नहीं उन्हें इसलिए भी आगे रहने का हक है कि वही इस

---

१ अमृतराय - हाथी के दाँत - पृ.१२२

अत्याचारी का खास शिकार रही है"।[1]

पुलिस अधिकारी नजीर ठाकुर पदुमनसिंह का खुशामदी था । संघर्ष छिड़ गया । नजीर ने पिस्तौल उठायी और रामसिंहपर दाग दी... रत्ना रामसिंह के पैरों के पास गिर पड़ी । रत्ना ने रामसिंह को बचाया । रत्ना के इस साहस के पीछे विचार था । उसने देखा था - " रावल जिस आदर्श के लिए जिया और मरा उसका निर्वाह रामसिंह करेगा । उस को मरना नहीं चाहिए । क्या मैं अपने रावल के लिए प्राण नहीं दे सकती ? भगवान्, मुझे साहस दे ।..."[2]

रामसिंह को बचाकर रत्ना शहीद हुई । रामसिंह की माँ पर ठाकुर पदुमनसिंह ने छब्बीस साल पहले बलात्कार किया था । रामसिंह ठाकुर का ही अनौरस पुत्र था ।

अन्याय का मुकाबला करनेवाली प्रगतिशील शक्ति को रत्ना कायम रखना चाहती है । उसका आत्मबलिदान जनहित के लिए है । उसके चरित्र में समाज सापेक्षता है । रत्ना के जीवन में व्यक्तिगत सुखों के लिए कोई स्थान नहीं । स्त्री का केवल घर का आभूषण बनकर रहना उसे पसन्द नहीं है । स्त्री अत्याचारी का शिकार बनती है और इस अत्याचार का मुकाबला करने के लिए स्त्री को ही आगे आना चाहिए यह रत्ना का मत है । वह केवल भावात्मक और वैचारिक स्तरपर ही क्रांतिकारी नारी नहीं है उसने बलिदान करके कृति के रूप में अपना क्रांतिकारी रूप व्यक्त किया है ।

रत्ना रावल की प्रेरणा और रामसिंह की रक्षक बनती है । वह एक विद्रोह करनेवाली नारी है । उसके चरित्र में स्वाभाविकता है, यथार्थता है । रत्ना प्रतिनिधि पात्र है और उसका चित्रण मानवीय रूप में प्रस्तुत हुआ है ।

---

१ अमृतराय - हाथी के दाँत - पृ. १२५

२ - वही - पृ. १२८

मार्क्सवादी आदर्शों की परिपूर्ति में कहाँतक सहायक ?

ऊषा (बीज), और रत्ना (हाथी के दाँत) दोनों नायिकाओंका चरित्र चित्रण स्वाभाविक ढंग से हुआ है । ऊषा के विचार आधुनिक हैं और उन विचारों में दृढ़ता है, समाजसापेक्षता है । वह सत्य से प्रेम करती है, उसीसे विवाह करती है । अन्तर्जातीय विवाह करने का साहस उस में है ।

ऊषा का प्रारंभिक रूप ऐसी साधारण नारी का है जो जिन्दगी में व्यक्तिगत सुखसुविधा चाहती है । आगे उस की यह दृष्टि बदल जाती है । वह नौकरी करती है स्वावलम्बी बनती है । सत्य की गिरफ़्तारी के बाद नई उम्मीद से जीवन संघर्ष के लिए तैयार होती है । उस में अनोखा साहस पैदा होता है । अछूत बस्ती में स्कूल खोलना, शोषितोंका नेतृत्व करना ये ऊषा के चरित्र को उभार देनेवाले पहलू हैं । उसमें आशावाद है और जीवन के प्रति अटूट आसक्ति भी है । ऊषा के स्वभाव की समाजाभिमुखता क्रान्तिकारी रूप धारण कर लेती है । आंदोलन का नेतृत्व करना और इस हक्की लड़ाई में घायल होना ऊषा के चरित्र को और भी गौरवशाली बनाते हैं ।

रत्ना भी एक ध्येयवादी नारी है । जालिमों के खिलाफ़ लड़नेवाला रावल रत्ना का प्रेमी है । रावल की हत्या के बाद रत्नाने ब्याह नहीं किया। उसने व्यक्तिगत सुख दुखों को कभी महत्व नहीं दिया । रत्ना भी एक ऐसी नारी है जो सामाजिक स्तरपर विचार करती है । वह ऐसी आधुनिक नारियोंका प्रतिनिधित्व करती है जो घर से बाहर आकर पुरुषों के अत्याचारोंका अन्यायों का मुकाबला करना चाहती है । रत्ना ऐसी हिम्मतवाली नारी है कि जो वीर रामसिंह को बचानेके लिए आगे बढ़ती है और गोली खाकर शहीद होती है ।उस के चरित्र में स्वाभाविकता है । वह अपने आदर्शों के प्रति वफ़ादार नारी है। रत्ना आशावादी और त्यागी है । उसे यह आशा है कि उसकी शहादत व्यर्थ नहीं होगी ।

ऊषा और रत्ना शोषक शक्ति के विरुध्द सर्वहारा का पक्ष लेकर संघर्ष करती है, अन्यायी परम्पराओं का विरोध करती हैं। दोनों समाज-सापेक्ष, सक्रिय, बुध्दिवादी और गतिशील नायिकाएँ हैं। ये मार्क्सवादी आदर्शों की परिपूर्ति में सहायक होनेवाली श्रेष्ठ नायिकाएँ हैं।

अन्तर्विरोध --

ऊषा और रत्ना दोनों भी प्रगतिशील विचारोंकी नायिकाएँ हैं। दोनों भी स्त्री को अबला नहीं मानती। दोनों का आत्मबल और सक्रियता में विश्वास है। जो कुछ भी वे करती हैं वह मानवी शक्ति में भरोसा रखकर ही करती हैं। इतना होनेपर भी दोनो भी ' ईश्वर ' को मानती हैं। शोषित, दलितों का दुख देखकर ऊषा कहती है -- " हे भगवान तेरी आँखों के सामने तेरी बच्चिया नंगी उघाडी घूमा करती हैं और तेरे किये कुछ नहीं होता - दु:शासन द्रौपदी का चीरहरण कर रहा है और तू नपुंसक की तरह बैठा देख रहा है ? सुना है कभी तूने द्रौपदी की लाज बचायी थी ... कि वह भी बस एक कहानी है ?"[१]

जब ऐसी किसी शक्तिपर विश्वास होता है तो मानवी कर्तृत्व पंगु, दुर्बल बन जाता है। अन्याय का मुकाबला करनेवाली शक्ति को कायम रखने के लिए बलिदान करनेवाली रत्ना भी परम्परागत प्रार्थना करती है -- ' भगवान् मुझे साहस दे। '

आत्मशक्ति और स्वसामर्थ्य में भरोसा रखनेवाली नायिकाओंका यह विश्वास उन के चरित्रों में स्पष्ट होनेवाला अन्तर्विरोध है।

---

१ अमृतराय - बीज - पृ. ४१०

भारतीय परिवेश के संदर्भ में मूल्यांकन --

ऊषा का चरित्र पूर्ण रूप से भारतीय परिवेश के साथ मेल खानेवाला है। वह अन्तर्जातीय विवाह करती है। सत्य के प्रति उसके मन में विवाह के पहले से ही आकर्षण था। भारतीय परम्परा के अनुसार दोनों ने भी कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। इतना ही नहीं विवाह का प्रस्ताव लेकर आनेवाले सत्य को पिताजी के पास ही भेज दिया। अन्तर्जातीय विवाह होते हुए भी कहीं कटु संघर्ष नहीं आने दिया। अछूतों की बस्ती में जो आत्मीयता और प्रेम ऊषा को मिलता है उससे उभरनेवाला ऊषा का चरित्र भी भारतीय समाज में गौरव पानेवाला पवित्र चरित्र है। ऊषा के चरित्र में उच्छृंखलता नहीं है।

रत्ना का चरित्र एक असाधारण नारीका चरित्र लगता है जब उस का विचार भारतीय परिवेश के संदर्भ में किया जाता है। रत्ना एक प्रेमिका के रूप में जब सामने आती है तो उसका असाधारणत्व महसूस होता है। वह रावल से प्रेम करती थी तब वह सोलह वर्ष की थी। रावल की मृत्यु के बाद उसने विवाह नहीं किया। पंद्रह वर्ष उसने विधवा की तरह बिताये। गांव के लोगों के मन में रत्ना के लिए एक प्रकार की श्रध्दा थी, सहानुभूति थी।

इस असाधारणत्व के साथ जो रत्ना के चरित्र के अन्य पहलू प्रकट हुए हैं वे भारतीय नारी चरित्र के अनुकूल ही है। विवाह न करते हुए भी वह व्रती नारी बनकर सभी का आदर प्राप्त करती है।

ऊषा और रत्ना दोनों नायिकाओंके चरित्र संयत रूप में चित्रित हुए है। ऊषा के चरित्र की तरह रत्ना के चरित्र में भी उच्छृंखलता नहीं है। भारतीय परिवेश के संदर्भ में ऊषा का चरित्र एक प्रगतिशील नारी के रूप में ही सफल रहा है।

स्वाभाविकता और यथार्थ के निकषपर मूल्यांकन --

एक मध्यम परिवार में जन्म लेनेवाली उषा अपना जीवन साधारण लड़की के रूप में प्रारंभ करती है और सच्चरित्र के बलपर दलित, शोषितों की नेता बनती है। उषा के चरित्र का यह विकास बड़े स्वाभाविक ढंग से हुआ है। पहले तो उषा को अपने घर का अभाव बहुत खलता है। वह वैयक्तिक सुखसुविधाओं की प्यासी रहती है लेकिन सत्य के विचारों से, क्रांतिकारी जीवन से प्रभावित होती है। रूस का चित्र प्रस्तुत करनेवाली प्रदर्शनी देखकर, जोया जैसी बहादुर लड़की का चरित्र जानकर, फूचिक की किताब पढ़कर उषा का चरित्र विकसित होता जाता है। उसका व्यक्तिवाद सामाजिकता में परिवर्तित होता जाता है और साम्यवादी विचार वह समझने लगती है। जुल्म, शोषण अन्याय को वह जानती है और उस की सैध्दान्तिक समझ सक्रियता में बदल जाती है। उषा का नौकरी करके आत्मनिर्भर होना, अछूत बस्ती में स्कूल खोलना और जीवन संघर्ष के लिए तत्पर होना ये सब परिवर्तन अत्यंत स्वाभाविक रूप में होते हैं। कहीं भी कृत्रिमता का आभास नहीं मिलता। अत: स्वाभाविकता और यथार्थ के निकष पर उषा का चरित्र अनोखी सफलता के साथ उभर आया है।

रत्ना के चरित्र के लिए 'हाथी के दाँत' में पर्याप्त स्थान नहीं है। अन्याय का मुकाबला करने की दृढ़ भावना लेकर प्रकट होनेवाला उस के चरित्र का सामाजिक पहलू ही अधिक प्रभावी रूप में सामने आया है। रावल की प्रेमिका के रूप में जो उसका चित्रण हुआ है उसके पीछे भी सामाजिकता ही है। राजपूत रावल को रत्ना जनम दिन की भेंट देती है वह है केसरिया बाना। रावल अन्याय और जुल्म के खिलाफ लड़ता रहे यही रत्ना की इच्छा है। रावल की हत्या के बाद रत्ना एक व्रती नारी का जीवन जीती है। एक प्रकार की एकांगिता रत्ना के चरित्र में आयी है। पन्द्रह वर्षा विधवा की तरह गूढ़ जीवन जीनेवाली यह नायिका रामसिंह को बचाने के लिए शहीद होती है। रत्ना के चरित्र के इस परिवर्तन में स्वाभाविकता और यथार्थता है।

निष्कर्ष --

अमृतराय की दोनों नायिकाएँ । ऊषा और रत्ना । प्रतिनिधि पात्र हैं और उनके चरित्र सामाजिक हैं । दोनों ने भी व्यक्तिगत सुख दु:खों को महत्व नहीं दिया है । दोनों बुर्जुआ संस्कारों से मुक्त हैं ।

जुल्म और शोषाण का मुकाबला करने के लिए दोनों नायिकाएँ संघर्ष करती हैं । संघर्ष के लिए आवश्यक आत्मबल और दृढ़ता उन में है । ऊषा का संघर्ष मेहतरों को न्याय दिलाने के लिए है और रत्ना का, अत्याचार का शिकार बननेवाली नारियों के लिए है । इस लडाई में एक घायल होती है तो दूसरी शहीद होती है । दोनों नायिकाओं में प्रेरणादायी वीरता है, तेजस्विता है ।

ऊषा आत्मनिर्भर नारी है । वह किसी का सहारा नहीं चाहती । सादगीसे जीवन बिताती है और सामाजिक जीवन में घुल मिल जाती है । रत्ना पाशमुक्त रहकर अपने आदर्शों के लिए लौकिक सुखों का त्याग करती है ।

ऊषा बुध्दिवादी नायिका है और रत्ना में भी यह झालक मिलती है । ऊषा सास के साथ रहना जब ठीक नहीं समझाती तो अलग रहने का निर्णय लेती है । वह व्यर्थ के सामाजिक नियमों की परवाह नहीं करती । जिस से प्रेम करती है उसीसे विवाह करती है और उसीके साथ आदर्श जीवनसाथी बनकर रहती है । रत्नाने रावल से प्रेम किया और उस की हत्या के बाद विधवा का जीवन जीती रही । उसने भी समाज की परवाह नहीं की । दोनों नायिकाओंका सामाजिक परिवर्तन में विश्वास है और दोनों भी इस परिवर्तन के लिए कटिबध्द हैं । अपनी सामाजिक प्रतिबध्दता के लिए दोनों नायिकाएँ त्याग करती हैं ।

दोनों नायिकाएँ आशावादी हैं । ऊषा का विश्वास है कि भविष्य में शोषितों का राज होगा । रत्ना का विश्वास है रावल के आदर्शों का निर्वाह रामसिंह करेगा इसी कारण वह रामसिंह को बचाकर खुद शहीद होती है ।

ऊषा और रत्ना प्रगतिशील नायिकाएँ हैं। अन्तर्जातीय विवाह करने में ऊषा साहस दिखाती है। ब्राह्मण ऊषा अछूतों की बस्ती में स्कूल खोलती है। रावल से प्रेम करनेवाली रत्ना विवाह के बिना विधवा होती है।

अमृतराय की दोनों नायिकाएँ सक्रिय नायिकाएँ हैं।